शिशुपालवध महाकाव्य में वर्णित 'वेदान्तदर्शन' के तत्त्व

*** प्रदीप नारायण शुक्ल**

'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है– वेद का अन्त। **वेदानाम् अन्तः इति वेदान्तः।** श्री बलदेव उपाध्याय 'अन्त' शब्द को रहस्य या सिद्धान्त मानकर वेदान्त का अर्थ– वेद का मन्तव्य बताते हैं। वेदान्तसार के कर्ता सदानन्दमुनि ने **''वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरकसूत्रादीनि च''**[1] कहकर वेदान्त की परिभाषा की है। अधिकांश विद्वानों ने तो वेदान्त शब्द का अर्थ वेद का अन्तिम भाग अर्थात् उपनिषदों से लिया है। उपनिषदों में सर्वत्र मुख्यरूप से आत्मा, ब्रह्म पर ही विचार किया गया है, यही वेदान्त के नाम से अभिहित हुआ है।

महाकविमाघ अपने ग्रन्थ शिशुपालवध में अद्वैत वेदान्त के तत्त्वों का निरूपण अनेक स्थलों पर करते हैं। संसार को मिथ्या तथा मायावच्छिन्न मानकर ब्रह्म या परमात्मा को ही एकमात्र सत्य मानते हैं। माघ अनेक स्थलों पर केवल ब्रह्मज्ञानप्राप्ति की साधना एवं मोक्षप्राप्ति की आकांक्षा प्रकट करते हैं। इस प्रकार महाकवि माघ द्वारा प्रतिपादित वेदान्त विषयक तत्त्वों का विवेचन हम अधोलिखित प्रकार से कर सकते है।

महाकवि माघ श्रीकृष्ण को समस्त दृश्यमान जगत् का आधार मानते हुए उनको पूर्णब्रह्म सिद्ध करते हैं–

युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो
जगन्ति यस्यां सविकासमासत
तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विष–
स्तपोधनाभ्यागमसंभवा मुदः।।[2]

अर्थात् सृष्टि के संहारकाल में भगवान् श्रीकृष्ण समस्त जीवात्माओं को अपने में समाहित कर लेते हैं जिस प्रकार मकड़ी अपने द्वारा उगले गये

---

* शोधार्थी, संस्कृत–विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

जाल को अपने में समाहित कर लेती हैं। अर्थात् कविमाघ ने श्रीकृष्ण को जगत् का निमित्त कारण और उपादान कारण दोनों मानते हैं। **'एकोऽहं बहुस्याम्'** के अनुसार सम्पूर्ण जीवात्मा कृष्ण (हिरण्यगर्भ) के व्यष्टिरूप ही तो है। अतः उनके शरीर में सम्पूर्ण जगत् बड़े ही आसानी से समाहित हो जाता है।

महाकवि माघ प्रस्तुत पद्य में वेदान्तदर्शन के अनिर्वचनीय तत्त्व माया के निवृत्ति का संकेत करते हैं–

जगत्यपर्याप्तसहस्रभानुना
न यन्नियन्तुं समभावि भानुना।
प्रसह्य तेजोभिरसंख्यतां गतै
रदस्त्वया नुन्नमनुत्तमं तमः।।1/27

भगवान् श्रीकृष्ण नारद से कहते हैं– महर्षे! संसार में हजारों किरणों वाला सूर्य जिस अन्तःकरणस्थ मोहान्धकार अर्थात् अज्ञान रूप अन्धकार को नहीं दूर कर सका, आपने उस सर्वश्रेष्ठ अज्ञानानन्धकार को अपने ज्ञान रूप तेज से बलपूर्वक नष्ट कर दिया। महाकवि माघ निर्गुण ब्रह्म की उपासना की ओर संकेत करते हैं।[3] इससे माघ के निर्गुणोपासक होने की पुष्टि होती है। आचार्य शङ्कर के अनुसार निर्गुण ब्रह्म उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय है। श्रुति का पर्यवसान निर्गुण की व्याख्या में है, क्योंकि निर्गुण ब्रह्म ही पारमार्थिक है–

इति ब्रुवन्तं तमुवाच स व्रती
न वाच्यमित्थं पुरुषोत्तम! त्वया।
त्वमेव साक्षात्करणीय इत्यतः
किमस्तिकार्यं गुरु योगिनामपि।।4

माघ प्रस्तुत पद्य में श्रीकृष्ण को पुरुषोत्तम नाम से सम्बोधित किया है। गीता में भी भगवान् स्वयं कहते है–

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।।[5]

माघ भगवान् श्रीकृष्ण को अग्रभूमि बताते हैं। उनको प्राप्तकर लेने पर पुनः कोई लौटता नहीं है। भगवत् साक्षात्कार ही वस्तुतः मोक्ष है। क्योंकि ''सोऽहम्'' यह श्रुतिवाक्य है। अतः नारद यह सिद्ध करते है कि कृष्ण ही मुमुक्षुओं के द्वारा साक्षात्करणीय है। प्रशस्तटीकाकार मल्लिनाथ लिखते हैं–

''तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।''

महाकवि माद्य भगवान् श्रीकृष्ण के निर्गुण स्वरूप का प्रतिपादन करने के अनन्तर प्रकृतोपयोगी सगुण स्वरूप का निरूपण करते है।[6] सगुणब्रह्म तो जगत् के समान माया विशिष्ट होने से मायिक सत्ता को धारण करता है।

निवेशयामासिथ हेलयोद्धृतं
फणाभृतां छादनमेकमोकसः।
जगत्त्रयैकस्थपतिस्त्वमुच्चकै
रहीश्वरस्तम्भशिरःसु भूतलम्।।[7]

अर्थात् तीनों लोकों के एकमात्र स्वामी आप इस भूतलरूप आवरण को ऊपर उठा लिया और सर्पों के पाताललोक के आवरण के रूप में ऊँचे–ऊँचे शेषनाग के फणरूपी खम्भों पर स्थापित कर दिया।

पुराणों के अनुसार भगवान् ने वाराहावतार धारणकर पृथ्वी को जल से ऊपर उठाकर पाताललोक के आवरण के रूप में शेषनाग के सहस्रों फणों पर स्थापित कर दिया। महाकवि माघ प्रस्तुत पद्य में सगुण दृष्टि से कृष्ण का ईश्वरत्व सिद्ध करते हैं।

महाकवि माघ वैष्णव वेदान्त में प्रतिपादित अवतारवाद का भी समर्थन करते हैं। महाकवि माघ भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार लेने और उनके द्वारा पृथ्वी का भार हल्का करने की ओर संकेत करते हैं–

लघूकरिष्यन्नतिभारभङ्गुराम
मूं किल त्वं त्रिदिवादवातरः।
उदूढलोकत्रितयेन साम्प्रतं
गुरुर्धरित्री क्रियतेतरां त्वया।।[8]

नारद जी कृष्ण से कहते हैं कि हे भगवान्! जब पृथ्वी दानवों के अत्याचार और अधर्म के भार से भंगुर हो रही थी, तब आप दानवों और अधर्म का विनाश कर पृथ्वी को उस भार से मुक्त कराने की इच्छा से पृथ्वी पर अवतरित हुये। परन्तु आपके उदर अथवा कुक्षि में तीनों लोक समाया हुआ है। इतना अधिक भार ग्रहणकर पृथ्वी पर विद्यमान है। अतः आपके भार से पृथ्वी अत्यधिक भारवती एवं गौरवशालिनी हो रही है।

जब पृथ्वी पर अधर्मजनित अत्याचार का भार बढ़ जाता है तब भगवान् स्वयं अवतरित होकर उसका भार कम करते हैं। जैसा कि भगवान् गीता में स्वयं कहते है।[9]

महाकवि माघ **'तत्त्वमसि'** के द्वारा कृष्ण के अखण्डार्थ ब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं। अद्वैतवेदान्त में जीवात्मा और ब्रह्म में प्रकाश और अन्धकार की भाँति अभेद सम्बन्ध है।[10] तात्पर्य यह है कि दो नहीं एक, अद्वैत है। **'आत्मानमेव निर्विशेष ब्रह्मसिद्धिः'** अर्थात् आत्मा ही ब्रह्म है तथा ब्रह्म ही आत्मा है। भाव यह है कि अज्ञान ही ज्ञान है और ज्ञान ही अज्ञान है।

इस प्रकार महाकवि माघ के ग्रन्थ का सूक्ष्म अध्ययन करने से पता चलता है कि माघ वेदान्त दर्शन के प्रतिष्ठित आचार्य रहे होंगे क्योंकि इन्होंने वेदान्त के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों का विवेचन शिशुपालवध महाकाव्य में किया है। इसके साथ ही साथ कवि माघ न्याय–वैशेषिक, सांख्य–योग और मीमांसा के भी मर्मज्ञ आचार्य थे।

सन्दर्भ–

1. वेदान्तसार, पृ0 50
2. शिशुपालवध, 1/23
3. वही, 1/31–33
4. वही, 1/31
5. श्रीमद्भगवद्गीता–15/18
6. शिशुपालवध, 1/34–39 तक
7. वही, 1/34

8. वही, 1/36
9. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत।
   अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। गीता 4/7।।
10. शिशुपालवध, 2/62